3. भ्रमरगीत के आधार पर सूरदास के विरह काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

पदों के आधार पर बिहारी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्य में घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए। 15

अथवा

वीररस के कवि के रूप में भूषण का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : 2×9=18

(i) सुन्दरकाण्ड में सीता की मनोदशा

(ii) सूरदास की भाव तरलता

(iii) केशवदास का आचार्यत्व

(iv) बिहारी का शब्द चयन

(v) घनानंद का विरह

(vi) भूषण का ओज काव्य

***

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **6464** **I**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्ति काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी० ए० (विशेष) हिंदी** – DSC

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।

अथवा

कौन हो कित कूं चले कित जात हो केहि काम जू ?
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू।।
एक गाँउ रहो कि साजन मित्र बन्धु बखानिये।
देश के परदेश के किधौं पंथ की पहिचानिये।।

(ख) गोकुल सबै गोपाल-उदासी।
जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।
यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।
अपनी सीतलताहि न छाँडत यद्यपि है ससि राहु-गरासी।।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी।।
सूरदास ऐसी को बिरहिन माँ गति मुक्ति तजे गुनरासी ?

अथवा

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज।।
उन हरकी हँसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाई।
नैन मिलैं मन मिलि गए, दोउ मिलवति गाइ।।

(ग) पहलें अपनाय सुजान सनेह सौं क्यों फिरि तेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनँद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर बाडव सु अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।

2. सुन्दरकाण्ड के आधार पर हनुमान के बुद्धि कौशल को समझाइए। 15

अथवा

हिंदी रीतिकाव्य के विकास में आचार्य केशवदास की भूमिका पर विचार कीजिए।